सामाजिक सुधार का अर्थ

Sol- भारत का इतिहास बहुत पुराना है और उतना ही पुराना है भारत का सुधारवादी आन्दोलन का इतिहास। यदि हम भारत में होने वाले सामाजिक सुधारों के इस इतिहास का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें तो हमें पता चलेगा कि समाज की कुरीतियों को सुधारने के सम्बंध में इस देश के लोग भी कभी भी अन्य देशों के लोगों से पिछड़े हुए नहीं थे। हां हो सकता है कि प्राचीन एवं मध्ययुग का सुधारवादी आन्दोलन वर्तमान सुधारवादी आन्दोलन से बिल्कुल भिन्न हो; पर यही नहीं था कि सुधार के प्रति लोगों की रुचि प्राचीन एवं मध्ययुग में न हो। प्राचीनकाल में इसका स्वरूप पारस्परिक सहायता-दान और विश्वप्रेम के रूप में था। धर्म में भी इस सम्बंध में अनेक उपदेश व निर्देशों का समावेश था। डॉ० आर० सी० मजूमदार ने लिखा है कि; "राजा, व्यापारी, जमींदार और अन्य सहायक संगठन अपने साधनों के अनुसार धर्म के पवित्र कार्य के लिए सहायता करने में एक दूसरे से आगे बढ़ने का प्रयास करते थे।" इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि प्राचीन काल में सुधारवादी आन्दोलन का एक धार्मिक रूप था।

सामाजिक सुधार का अर्थ (Meaning of Social Reform) - सामाजिक व्यवस्था एक गतिशील व्यवस्था है, न कि एक जड़ या स्थिर व्यवस्था। इसका तात्पर्य यह है कि समाज की व्यवस्था में एक प्रकार की 'गति' (movement) होती है। इस गति के दौरान समाज केवल अच्छे तत्वों को ही नहीं बल्कि बुरे तत्वों को भी अपने में समेट लेता है। ये अच्छे तत्व सामाजिक प्रगति के कारण बन जाते हैं और बुरे तत्वों को अपने में समेट लेता है। ये तत्व सामाजिक प्रगति के कारण बन जाते हैं और

समस्या के कारण बन जाते हैं और समाज के शरीर पर फोड़ों की भाँति रहकर उसे कष्ट देते रहते हैं और उसकी सामाजिक समस्या की स्वाभाविक गति को रोकते हैं। समाज को स्वस्थ बनाने के लिए इन 'फोड़ों' को चीरफाड़कर समाप्त कर देने की आवश्यकता होती है। समाज को स्वस्थ व प्रगतिशील बनाने के इस कार्य को ही समाज-सुधार कहते हैं और इन कार्यों को करते हुए उनको सामाजिक सुधारक कहा जाता है। समाज में फोड़े, वास्तव में सामाजिक कुरीतियाँ या कुप्रथाएं धार्मिक अंधविश्वास, सामाजिक भेदभाव आदि होते हैं इनकी प्रकृति प्रत्येक समाज तथा प्रत्येक युग में अलग-अलग होती है। इसलिए इन्हें दूर करने या समाप्त करने के लिए किये गए प्रयत्न भी सभी समाजों में तथा सभी युगों में एकसमान नहीं हुआ करते। इस दृष्टिकोण से यह कहा जा सकता है कि सामाजिक सुधार एक गतिशील अवधारणा है।

अतः समाज-सुधार एक गतिशील कार्य का प्रयत्न है जो सामाजिक कुप्रथाओं, धार्मिक अंधविश्वासों, सामाजिक सांस्कृतिक भेदभाव आदि को दूर करने के लिए सामूहिक या व्यक्तिगत रूप में किया जाता है और जिसका कि उद्देश्य सामाजिक विकास के किसी भी चरण में समाज के अन्तर्गत व्यक्ति, परिवार एवं समूह के जीवन को अधिक स्वस्थ व प्रगतिशील बनाना है।

समाज-सुधार और समाज-कल्याण में सम्बंध -

समाज-सुधार तथा समाज-कल्याण में पारस्परिक सम्बंध अत्यंत घनिष्ठ है वास्तव में समाज-सुधार का कार्य समाज-कल्याण के पथ को प्रशस्त करता है। समाज-सुधार का सीधा सम्बन्ध उन सामाजिक कुप्रथाओं, रूढ़ियों आदि से होता है जो कि मानवीय सम्बन्धों को निर्बल बनाकर समाज के कल्याण के पथ पर रोड़ा बन जाती हैं। समाज-सुधार के कार्यों द्वारा इस बाधा को या तो समाप्त किया जाता है या उसके प्रभाव को कम किया जाता है। इसके फलस्वरूप एक ऐसे स्वस्थ जनमत का निर्माण होता है या निर्माण होने के लिए एक ऐसा अनुकूल वातावरण उत्पन्न होता है, जिसके अन्तर्गत समाज-कल्याण का कार्य सरल हो जाता है। वैसे समाज-कल्याण का क्षेत्र पर्याप्त विस्तृत है, क्योंकि यह सामाजिक सेवाओं और प्रयत्नों का वह संगठित रूप है जिसके द्वारा जनता का सर्वांगीण कल्याण सम्भव हो। समाज-सुधार मुख्यतः सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक अंधविश्वासों तथा सामाजिक भेदभाव को दूर करने का प्रयत्न करता है जोकि अंतिम रूप में समाज-कल्याण कार्य का ही एक अनिवार्य अंग बन जाता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि समाज-सुधार तथा समाज-कल्याण का सम्बन्ध आन्तरिक तथा आवश्यक है

समाप्त